

स्वर्णभृंगार पुं. (तत्.) 1. भृंगारा, पीला भृंगाराज (वनस्पति) 2. स्वर्ण कलश।

स्वर्णमय वि. (तत्.) 1. जो स्वर्ण युक्त हो, सोने को मिलाकर बनाया हुआ 2. जो पूर्णतया सोने से निर्मित हो।

स्वर्णमाक्षिक पुं. (तत्.) 'सोनामाखी' नामक एक प्रसिद्ध उपधातु।

स्वर्णमाता स्त्री. (तत्.) हिमालय की एक छोटी नदी।

स्वर्णमान पुं. (तत्.) अर्थ. अर्थशास्त्र के अनुसार किसी देश की वह आधिकारिक मुद्रा की इकाई या मान जिसमें स्वर्ण की एक निर्धारित मात्रा होती है।

स्वर्णमानक पुं. (तत्.) एक प्रकार का स्वर्णमान।

स्वर्णमीन पुं. (तत्.) सोने जैसे रंग की या सुनहली एक मछली।

स्वर्णमुखी स्त्री. (तत्.) 1. मध्ययुगीन वह नाव जो 64 हाथ लंबी 32 हाथ ऊँची और 32 हाथ चौड़ी होती है।

स्वर्णमुद्रा स्त्री. (तत्.) 1. सोने का बना सिक्का 2. अशरफी।

स्वर्णयूथिका स्त्री. (तत्.) एक पुष्पलता जिसके फूल पीले, गुच्छेदार और अत्यंत मोहक सुगंध वाले होते हैं।

स्वर्णयूथी स्त्री. (तत्.) वह लता जिससे गुच्छों के रूप में पीले रंग के फूल मिलते हैं और बहुत ही मनमोहक सुगंध वाले होते हैं।

स्वर्णरंभा स्त्री. (तत्.) 1. स्वर्ण कदली, पीला केला 2. चंपा केला।

स्वर्णरस पुं. (तत्.) 1. मध्यकालीन तांत्रिकों के अनुसार या रासायनिकों के मत में वह रस जिसके स्पर्श से कोई धातु सोना बन जाती है या बन सकती हो 2. परवर्ती रहस्यवादी साधकों में वह क्रिया या तत्व जिसमें मन की चंचलता नष्ट होकर पूर्ण शांति प्राप्त होती है।

स्वर्णरेखा स्त्री. (तत्.) 1. सोने की लकीर या रेखा जो कसौटी पर सोना कसने से बनती है 2. 'सुवर्ण-रेखा' एक नदी।

स्वर्णलता स्त्री. (तत्.) 1. पीली जीवंती 2. मालकंगनी, ज्योतिष्मती।

स्वर्णलाभ पुं. (तत्.) 1. स्वर्ण की प्राप्ति 2. अत्यधिक धनलाभ।

स्वर्णलेखा स्त्री. (तत्.) सोने की लकीर, सुवर्ण रेखा।

स्वर्णवज्र पुं. (तत्.) एक प्रकार का लोहा।

स्वर्णवर्ण वि. (तत्.) सोने के रंग वाला, सुनहला पुं. सोने का रंग।

स्वर्ण-वर्णा स्त्री. (तत्.) 1. हल्दी, जो औषध या मसाले के रूप में प्रयुक्त होती है 2. दारुहल्दी।

स्वर्ण-वल्ली स्त्री. (तत्.) 1. रक्तफला, सोना वल्ली 2. पीली जीवंती।

स्वर्णविंदु पुं. (तत्.) 1. विष्णु का एक नाम 2. एक प्राचीन तीर्थ।

स्वर्ण शिख पुं. (तत्.) 1. स्वर्णचूड़, नीलकंठ नामक पक्षी 2. मुर्गा।

स्वर्ण शृंगी पुं. (तत्.) पुराणानुसार सुनहरे शिखरों वाला एक पर्वत जो सुमेरु पर्वत के उत्तर की ओर माना जाता है वि. सुनहरे सींग वाला या सोने से मढ़े सींग वाला।

स्वर्णसिंदूर पुं. (तत्.) रस सिंदूर।

स्वर्णाकर पुं. (तत्.) सोने की खान।

स्वर्णाचला पुं. (तत्.) उड़ीसा प्रदेश में भुवनेश्वर नामक तीर्थ।

स्वर्णातप पुं. (तत्.) प्रातः या सायं काल की सुनहली धूप।

स्वर्णाभ वि. (तत्.) 1. सोने के जैसी आभा वाला, सोने जैसा चमकदार, सुनहला 2. वह प्रतिभूति जो सभी प्रकार से सुरक्षित हो, उसके डूबने का भय न हो।